महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय) (A
Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

मूल स्रोत ही हो शोध का केंद्र

हिंदी विश्वविद्यालय में शोध-प्रविधि पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में वक्ताओं ने रखे विचार

संगोष्ठी में गुरूवार को अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए प्रो. एस. एन. चौधरी तथा मंचस्थ अतिथि। दूसरे चित्र में उपस्थित शोधार्थी एवं प्रतिभागी।

वर्धा दि. 30 अगस्त 2012 : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में शोध-प्रविधि : स्वरूप और सिद्धांत विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के दुसरे दिन गुरूवार को प्रथम सत्र में देशभर के विभिन्न विद्वानों ने शोध-प्रविधि पर प्रपत्र प्रस्तुत कर अपनी बात रखी। प्रथम सत्र में प्रो. प्रमोद कुमार सिन्हा, डॉ. सुधीर चंद्र जेना, डॉ. ज्ञान प्रकाश सिंह तथा विश्वविद्यालय के साहित्य विद्यापीठ के असिस्टेंट प्रोफेसर अशोक नाथ त्रिपाठी, भाषा विद्यापीठ के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. अनिल कुमार दुबे, दूर शिक्षा में असिस्टेंट प्रोफेसर अमरेंद्र कुमार शर्मा तथा डॉ. भदंत आनंद कौसल्यान बौद्ध अध्ययन केंद्र के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. सुरजीत कुमार सिंह आदि ने अपना मंतव्य प्रस्तुत किया। सत्र की अध्यक्षता बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय के प्रो. एस. एन. चौधरी ने की।

This document was created using Smart PDF Creator
To remove this message, purchase the product at www.SmartPDFCreator.com

हबीब तनवीर सभागार में सत्र की शुरूआत करते हुए डॉ. जैना ने सिद्धांत का उपयोग और उसकी महत्ता को केंद्र मे रखते हुए अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि लोगों के साथ और लोगों के लिए सिद्धांत का उपयोग कर शोध करना चाहिए। शोध के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन होना चाहिए परंतु आज के अनुसंधान में सामाजिक शोध पर अमल नहीं हो पा रहा है। डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी ने कहा कि चिंतन ही शोध का मूल है। उन्होंने उपाधि और निरूपाधि शोध की विस्तार से व्याख्या की और कबीर और तुलसीदास के साहित्य को निरूपाधि शोध की संज्ञा दी। उन्होंने वर्णनात्मक, तुलनात्मक और ऐतिहासिक शोध पर उदाहरण के साथ अपनी बात को रखा। डॉ. अनिल कुमार दुबे ने सामाजिक अच्छाई के सवाल को उधृत करते हुए कहा कि इसे अनुसंधान से मुक्त रखना चाहिए। अमरेंद्र कुमार शर्मा ने शोध में 'स्व' की महत्ता को अधोरखित करते हुए कहा कि शोधकर्ता को आग्रहशिल नहीं, निरपेक्ष होना चाहिए। उन्होंने शोध निर्माण परीक्षण, शोध की युक्ति, दृष्टिकोण आदि को केंद्र में रखकर शोध करने की सलाह दी और कहा कि शोध में अभी भी क्रिटिकल सेन्स विकसित नहीं हुआ है।

This document was created with Smart PDF Creator
To remove this message purchase the product at www.SmartPDFCreator.com

डॉ. सुरजीत कुमार सिंह ने अपनी बात बौद्ध अध्ययन में शोध प्रविधि की समस्या पर रखी। उन्होंने कहा कि मूल स्रोत ही शोध में अहम होता है। उन्होंने कुछ शोधकर्ताओं की कृतियों का हवाला देते हुए कहा कि पूर्वाग्रह से ग्रसित मानसिकता अनुसंधान में भ्रम पैदा करती है। इससे बचने के लिए शोधकर्ता को द्वितियक स्रोत नहीं अपनाना चाहिए।

उन्होंने अपील की कि बौद्ध चिंतन पर किए गये शोध में राहुल सांकृत्यान, धर्मानंद कौसंबी तथा के. टी. एस. राव जैसे चिंतकों के साहित्य पढ़कर मूल स्रोत की खोज करनी चाहिए। डॉ. ज्ञान प्रकाश सिंह ने गुणात्मक तथा संख्यात्मक शोध पर पावर पॉईन्ट के माध्यम से विस्तार से जानकारी दी। अध्यक्षीय वक्तव्य प्रो. एस. एन. चौधरी ने भी शोधकर्ताओं से आग्रह किया कि मूल किताबे पढ़कर ही वे अपने शोध को समाज के लिए एक नया विचार दें। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अध्यापक, शोधार्थी तथा देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों से आए प्रतिभागी, शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

<u>कल होगा समापन</u>

संगोष्ठी का समापण शुक्रवार दिनांक 31 अगस्त को 2.30 बजे होगा। समापण के पूर्व प्रतिभागी और विशेषज्ञों के बीच चर्चा सत्र होगा तथा संगोष्ठी प्रतिवेदन इसी सत्र में प्रस्तुत किया जायेगा।

बी. एस. मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी

This document was created using Smart PDF Creator
To remove this message purchase the product at www.SmartPDFCreator.com